

चंपावत को आदर्श ज़िला बनाने की कार्ययोजना

चर्चा में क्यों?

हाल ही में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सचिवालय में चंपावत ज़िले को आदर्श ज़िला बनाने की कार्ययोजना और चल रहे कार्यों की समीक्षा की।

- उत्तराखंड को आदर्श राज्य बनाने के लिये चंपावत ज़िले को आदर्श ज़िले के रूप में लिया जा रहा है।

मुख्य बंदि:

- चंपावत में **मैदानी, तराई, भाबर** और पहाड़ी क्षेत्रों सहित **वविधि भौगोलिक परस्थितियाँ** हैं।
- मुख्यमंत्री ने **वकिस और वरिसत** दोनों को आगे बढाने के महत्त्व पर जोर देते हुए अधिकारियों से **आदर्श जनपद चंपावत** के लिये कार्ययोजना को तेज़ी से लागू करने का आग्रह कयि।
- उन्होंने अधिकारियों को **पारस्थितिकी और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के साथ वकिस कार्यों का समन्वय करने का भी नरिदेश दयि।** साथ ही प्राकृतिक वरिसत के संरक्षण को वकिस प्रयासों में एकीकृत कयि जाने की बात कही।
- चंपावत ज़िला **धार्मिक, आध्यात्मिक और साहसिक पर्यटन** के लिये कई अवसर प्रदान करता है।
- ज़िले में आने वाले शरदधालुओं और पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये तीन से चार दविसीय यात्रा सर्कटि बनाना महत्त्वपूर्ण है।
- **पूरणागरी मंदरि** में बड़ी संख्या में शरदधालु आते हैं, इसलिये उनकी सुवधि सुनश्चिति करने हेतु आवश्यक व्यवस्था करना महत्त्वपूर्ण है।
- चंपावत ज़िले में **पर्यटन, कृषि, बागवानी, स्वास्थय सेवा, शकिसा, दूध** और इससे जुड़े उत्पादों को बढावा देने के लिये कार्ययोजना बनाई जा रही है। इसका लक्ष्य चंपावत को आदर्श राज्य बनाना है, जिसके लिये वर्ष 2030 तक की योजनाएँ बनाई जा रही हैं।
- चंपावत ज़िले के प्रत्येक पात्र व्यक्तिको **केंद्र और राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं** का लाभ मलि, इसके लिये प्रयास कयि जा रहे हैं।
- **सौर ऊर्जा** में संभावनाओं को तलाशने पर वशिष ध्यान दयि जा रहा है। साथ ही, टाउन प्लानगि पर वशिष ध्यान देकर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर बढते पलायन को रोकने पर भी ध्यान दयि जा रहा है।

पूरणागरी मंदरि

- पूरणागरी को पुण्यगरी के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदरि **शारदा नदी** के पास स्थति है। **पूरणागरी मंदरि** अपने चमत्कारों के लिये भी जाना जाता है
- माँ पूरणागरी मंदरि उत्तराखंड के चंपावत ज़िले के टनकपुर के परवतीय क्षेत्र में अन्नपूरणा छोटी की चोटी पर लगभग 3000 मीटर की ऊँचाई पर स्थति है
- मंदरि को शक्तपीठ माना जाता है और यह **108 सदधिपीठों में से एक है।** ऐसा माना जाता है क इस स्थान पर माता सती की नाभगिरि थी।